Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 7

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

21 अप्रैल 2016 ई   13 रजब 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपनी फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

नबी ख़ुदा की सूरत दिखाने का आइना होता है इसी आइना के माध्यम से ख़ुदा का चेहरा नज़र आता है।

प्राचीन से और जब से कि दुनिया पैदा हुई है ख़ुदा का पहचानना नबी की पहचान करने से जुड़ा है इसलिए यह अपने असंभव और कठिन है कि सिवाय नबी के माध्यम के तौहीद (एकेश्वरवाद) मिल सके। तौहीद का कारण और तौहीद का पैदा करने वाला और तौहीद का बाप और तौहीद का स्रोत और तौहीद की उत्तम अभिव्यक्ति केवल नबी ही होता है उसी के माध्यम से ख़ुदा का छिपा चेहरा नज़र आता है और पता लगता है कि ख़ुदा है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"यह भी याद रहे कि ख़ुदा के अस्तित्व का पता देने वाले और उसके एकमात्र ला शरीक होने का ज्ञान लोगों के सिखलाने वाले केवल अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं। और अगर यह पवित्र लोग दुनिया में न आते तो सीधे मार्ग का निश्चित रूप से पाना एक कठिन और असम्भव काम था हालांकि ज़मीन और आसमान पर विचार करके और उन की उत्तम तथा पूर्ण तरतीब पर नज़र डालकर एक सही फितरत और नेक दिल इंसान मनुष्य तलाश कर सकता है कि इस हिक्मत के कारख़ाना के बनाने वाला कोई ज़रूर "होना चाहिए" लेकिन इस वाक्यांश में कि ज़रूर होना चाहिए और इस वाक्यांश में कि वाकई "वह है" बहुत अंतर है। वाकई अस्तित्व पर सूचना देने वाले केवल अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं जिन्होंने असंख्य चिन्हों और चमत्कारों से दुनिया को साबित कर दिखाया कि वह हस्ती जो अत्यधिक छुपी और सभी शक्तियों का सार है वास्तव मौजूद है। और सच तो यह है कि इतनी बुद्धि भी कि संसार के निज़ाम (प्रणाली) को देखकर के वास्तविक निर्माता की ज़रूरत महसूस हो, यह मरतबा अक्स भी नबुव्वत की किरणों से ही लाभान्वित है। अगर अंबिया अलैहिमुस्सलाम का अस्तित्व न होता तो इतनी बुद्धि भी किसी को प्राप्त नहीं होती। इसका उदाहरण यह है कि हालांकि ज़मीन के नीचे पानी भी है लेकिन इस पानी का अस्तित्व और वजूद आसमानी पानी से जुड़ा है। जब कभी ऐसा संयोग होता है कि आसमान से पानी नहीं बरसता तो भूजल भी सूख जाते हैं। और जब आकाश से पानी बरसता है तो ज़मीन में भी पानी जोश मारता है। इसी तरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के आने से अक्लें तेज़ हो जाती हैं और बुद्धि जो भूजल है अपनी हालत में तरक्की करती है। और फिर जब लम्बी अवधि इस बात पर गुज़रती है कि कोई नबी भेजा नहीं जाता तो अकलों का भूजल गंदा और कम होना शुरू हो जाता है और दुनिया में मूर्ति पूजा और बहुदेववाद और प्रत्येक प्रकार की बुराई फैल जाती है। सो जैसे आंख में एक रोशनी है और वह बावजूद इस रोशनी के फिर भी सूर्य की मोहताज है उसी तरह दुनिया की अक्लें जो आंख जैसी हैं हमेशा नबुव्वत के सूर्य की मोहताज रहती हैं और जभी वह सूर्य छिप जाए उन में तुरन्त गदला पन और अंधेरा पैदा हो जाता है। क्या तुम सिर्फ आंख से कुछ देख सकते हो ? हरगिज़ नहीं। इसी तरह तुम बिना नबुव्वत की रोशनी के भी कुछ नहीं देख सकते।

इसलिए चूंकि प्राचीन से और जब से कि दुनिया पैदा हुई है ख़ुदा का पहचानना नबी की पहचान करने से जुड़ा है इसलिए यह अपने असंभव और कठिन है कि सिवाय नबी के माध्यम के तौहीद (एकेश्वरवाद) मिल सके। नबी ख़ुदा की सूरत दिखाने का आइना होता है इसी आइना के माध्यम से ख़ुदा का चेहरा नज़र आता है। जब ख़ुदा तआला अपने आप को दुनिया में प्रदर्शित करना चाहता है तो नबी को जो उसकी कुदरतों की अभिव्यक्ति है, दुनिया में भेजता है और अपनी वह्यी उस पर नाज़िल (अवतरित) करता है और अपनी रबूबियत की शक्तियां उसके द्वारा दिखलाता है। तब दुनिया को पता लगता है कि ख़ुदा मौजूद है। इसलिए जिन लोगों का अस्तित्व आवश्यक के रूप में ख़ुदा के प्राचीन कानून की दृष्टि से ख़ुदा को पहचानने के लिए स्रोत निर्धारित हो चुका है उन पर विश्वास करना तौहीद का एक अंग है और सिवाय इस ईमान के तौहीद पूर्ण नहीं हो सकती। क्योंकि संभव नहीं कि बिना उनके आसमानी चिन्ह और कुदरत दिखाने वाले चमत्कार जो नबी दिखलाते हैं और अनुभूति तक पहुंचाते हैं वह शुद्ध एकेश्वरवाद जो ईमान के चश्मे से पैदा होती है मिल सके। वही एक क़ौम है जो ख़ुदा को दुशाने वाली है जिनके माध्यम से वह ख़ुदा जिसका अस्तित्व अत्याधिक छुपा बल्कि बहुत छुपा और ग़ैब है प्रकट होता है और हमेशा से वह छुपा ख़ज़ाना जिसका नाम ख़ुदा है नबियों के माध्यम से ही पहचाना गया है। वरना वह तौहीद जो ख़ुदा के निकट तौहीद कहलाती है जो व्यावहारिक रंग पूर्ण रूप में चढ़ा हुआ होता है उसका नबी के माध्यम के बिना प्राप्त होना जैसा कि बुद्धि के ख़िलाफ है वैसा ही सालकीन के तजुर्बो के विरुद्ध है।

कुछ नादानों को जो यह भ्रम गुज़रता है कि मानो मुक्ति के लिए केवल तौहीद पर्याप्त है नबी पर ईमान की जरूरत नहीं गोया वह रूह को शरीर से अलग करना चाहते हैं यह भ्रम केवल दिल के विचार पर आधारित है। जाहिर है जबकि तौहीद वास्तविक का अस्तित्व ही नबी के माध्यम से होता है और बिना उसके असम्भव और कठिन है तो वह बिना नबी पर ईमान के कैसे मिल सकती है। और अगर नबी को जो जड़ तौहीद की है ईमान लाने में अलग कर दिया जाए तो तौहीद क्योंकर स्थापित रहेगी। तौहीद का कारण और तौहीद का पैदा करने वाला और तौहीद का बाप और तौहीद का स्रोत और तौहीद की उत्तम अभिव्यक्ति केवल नबी ही होता है उसी के माध्यम से ख़ुदा का छिपा चेहरा नज़र आता है और पता लगता है कि ख़ुदा है बात यह है कि एक तरफ तो हज़रत अहदयत जल्ला शानहो(अर्थात अल्लाह तआला) की ज़ात बहुत अधिक इस्तग़ना और बे नियाज़ी में पड़ी है उस को किसी की हिदायत और ज़लालत की परवाह नहीं। और दूसरी ओर वह अपने आप यह भी चाहता है कि वह पहचान जाए और उसकी हमेशा की रहमत से पवित्र लोग लाभ उठाएं। इसलिए वे ऐसे दिल पर जो ज़मीन वालों के सभी दिलों में से मुहब्बत और नज़दी तथा सुब्हान को का प्राप्त करने के लिए कमाल दर्जा की कुदरती शक्ति अपने अंदर रखता है और इसी तरह पूर्ण रूप से मानव जाति की सहानुभूति अपने अन्दर रखता है तजल्ली (प्रकट) फरमाता है और इस पर अपनी हस्ती और चिरस्थायी सनातन गुणों के नूर प्रकट करता है और इस तरह वह विशेष और उच्च स्वभाव का आदमी जिसे दूसरे शब्दों में नबी कहते हैं उसकी तरफ खींचा जाता है। फिर वह नबी इस कारण से कि मानव जाति की सहानुभूति का उसके दिल में पूर्णता रूप से जोश होता है अपनी आध्यात्मिक तोज़ीहात और विलय और विनम्रता से यह चाहता है कि वह ख़ुदा जो उस पर ज़ाहिर हुआ है दूसरे लोग भी उसको पहचानें और मुक्ति पाएँ और वह दिली इच्छा से अपने अस्तित्व की कुर्बानी ख़ुदा तआला के सामने पेश करता है और इस तमन्ना से कि लोग ज़िन्दा हो जाएं कई मौतें अपने लिए स्वीकार कर लेता है और बड़ी कोशिशों में अपने आप को डालता है जैसा कि इस आयत में इशारा है

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ

(यानी किया तो इस शोक में अपने आप को मार देगा कि काफिर लोग क्यों ईमान नहीं लाते) तब हालांकि ख़ुदा जीव से बेनियाज़ है मगर उसके चिरस्थायी पीड़ा और दर्द और वेदना और क्रन्दन और विनय और फना और अत्यधिक हालत की सच्चाई और नेकी पर नज़र कर के सृष्टि के भड़कते दिलों पर अपने निशानों के साथ अपना चेहरा प्रदर्शित कर देता है और उसकी जोश वाली दुआओं की तहरीक से जो आसमान में एक दर्दनाक शोर डालती हैं ख़ुदा तआला के निशान ज़मीन पर बारिश की तरह बरसते हैं। और अज़ीम निशान दुनिया के लोगों को दिखलाए जाते हैं जिनसे दुनिया देख लेती है कि ख़ुदा है और ख़ुदा का चेहरा नज़र आ जाता है लेकिन अगर वह पवित्र नबी इतनी दुआ और विनय और वेदना से ख़ुदा तआला की ओर ध्यान न करता और ख़ुदा के चेहरा की चमक दुनिया में दिखाने के लिए अपनी कुर्बानी नहीं देता और प्रत्येक कदम में हज़ारों मौतें स्वीकार नहीं करता तो ख़ुदा का चेहरा दुनिया में हरगिज़ प्रकट नहीं होता।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22, पेज 114 - 117)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

तकवा की बारीक राहों की पहचान

ग्यारह दिलचस्प उदाहरण से

हज़रत सैयद मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब

जितना ज्ञान मनुष्य के दिल में स्पष्ट और विवरण से दाख़िल होता है। इतना कभी सार गर्भित बयानों से दाखिल नहीं हो सकता यही कारण है कि क़ुरआन में एक ही बात को कई कई तरीकों में और नए नए संदर्भ से परिभाषित किया गया है और इसकी विभिन्न शाखाओं को अलग अलग तरीकों से स्पष्ट किया गया है।

इस भूमिका के बाद अब मैं कुछ नमूने मुत्तक़ीनों के कामों के बयान करता हूँ और अधिक विस्तार आदरणीय पाठकों के लिए स्वयं चिन्ता के लिए छोड़ देता हूँ।

पहला उदाहरण

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी एक बार कश्मीर तशरीफ़ ले गए। भालू मारने का लाइसेंस लिया हुआ था। सफ़र के दौरान में एक जगह ठहरे हुए थे। जहां अहमदियों की आबादी थी। वहाँ हुज़ूर ने शिकार के लिए एक पहाड़ी जंगल में प्रवेश किया। लोगों ने हांक शुरू किया। एक मुशक वाला हिरण हांक से निकला और बिल्कुल सामने आकर खड़ा हो गया राइफल हुज़ूर के कंधे के साथ लगी हुई थी और नाली शिकार से। हम राही बेकरार थे कि ऐसा अजीब दुर्लभ शिकार सामने खड़ा हुआ क्यों नहीं निकाल दिया जाता। हुज़ूर ने अचानक राइफल नीचे कर ली। वह हिरण भाग गया। फरमाया कि इस का विशेष लाइसेंस न होने के कारण मेरे लिए उस पर फायर करने की इजाज़त नहीं थी घर वापस आने पर कुछ लोग जो साथ थे कहने लगे। कैसा उत्कृष्ट शिकार सामने आया था हम तो कभी ऐसे उत्कृष्ट शिकार को नहीं छोड़ा है। अगर ऐसी सावधानियां करने लगें तो बस शिकार हो चुका मगर उन बेचारों को मालूम न था कि अगर ऐसी सावधानियां न की जाएं तो बस तकवा हो चुका।

दूसरा उदाहरण

मेरे एक बुजुर्ग हैं। उनके पास धीरे-धीरे 90 के करीब खोटे रुपए जमा हो गए। जिन में कुछ तो ऐसे खोटे थे। जिनका एक हिस्सा चांदी के कारण बिक्री योग्य था और कुछ ऐसे थे जो केवल नकली और बेकार थे। उन्होंने निष्क्रिय तो सब तालाब में फिंकावा दिए और जो दूसरे थे वे बिकने भेज दिए और ले जाने से कह दिया कि उन्हें किसी सुनार के हाथों बेच कर उन्हें अपने सामने इसी से कटवा देना ताकि फिर बतौर सिक्का न चलाए जा सकें। सुनार ने यह बात मान कर उन्हें खरीद लिया और निर्धारित मूल्य अदा कर दिया लेकिन जब उनके कर्मचारी ने काटने की मांग की। तो सुनार लड़ने लगा कि जब मैंने मोल ले लिए हैं, तो अब तुम्हारा क्या काम। उन्हें साबित ही बैच लूँगा। मगर वह न माना। अंत वापस ले लिए गए इस पर सुनार ने कहा कि अच्छा इस शर्त पर काटूंगा कि उनकी कीमत इतनी कम दो। यह बात उन्होंने तुरंत मान ली और बहुत थोड़ी राशि मुआवज़े में ले ली। मगर एक एक रुपया कटवा कर छोड़ा। हालांकि आमतौर पर लोग अव्वल तो खोटा रुपया ख़ुद ही कोशिश करके चला देते हैं। यदि यह न हो सके तो किसी चालाक आदमी के माध्यम से इसे बाजार में चलवा देते हैं या दलालों के हाथ कुछ क़ीमत पर बेच देते हैं, आगे वे इसे चलाने और कुछ ज़ालिम तो जेब में या दुकान में हर समय ऐसे खोटे रुपये तैयार रखते हैं। जब कोई साधारण तबीयत का ग्रामीण सौदा खरीदने आ जाता है। तो उसका अच्छा रुपया लेकर चालाकी से तुरंत अपना ख़राब रुपया इसे देकर कहते हैं कि भाई साहब यह आप का रुपया ठीक नहीं। इसे बदल दीजिए। ग़रज़ यह अंतर है मुतक्की और ग़ैर मुत्तकी में। एक उन में से नाऊज़ बिल्लाह। ख़ुदा को अंधा समझता है और दूसरा उसे देखने वाला विश्वास करता है। तो क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि ख़ुदा को अंधा समझने वाला उसकी हस्ती से कोई रूहानी लाभ उठा सकता है।

तीसरा उदाहरण

एक आदमी को डाक में एक ख़त मिला। संयोग से इस के टिकट पर मुहर लगाना या तो डाक ख़ाने वाल ही भूल गया या लगाई तो मुहर की तस्वीर साफ न आई। अत: टिकट बिल्कुल कोरा रहा। इस आदमी के लड़के ने वह टिकट उतार कर बताया कि अब्बा जान देखिए यह टिकट फिर इस्तेमाल हो सकता है। उस ने लड़के से टिकट लेकर फाड़ कर फेंक दिया कि अब हमारे लिए टिकट दोबारा उपयोग नाजाज़ (अवैध) है। कोई ग़ैर मुत्तकी होता तो इस टिकट का उपयोग न केवल जायज़ मानता। बल्कि ऐसी समझदारी को गर्व वर्णन करता।

चौथा उदाहरण

मुत्तकी और ग़ैर मुत्तकी दोनों बाज़ारों और आम रास्तों और भीड़ में महिलाओं की तरफ अपनी नज़र नीची रखते हैं। मगर जब किसी अकेली जगह कोई औरत मुंह खोले हुए गुज़रे। जहां कोई देखने वाला न हो। तो ग़ैर मुत्तकी ख़ुदा की तरफ से गज़्ज़े बसर(आंखें नीची) करके इस महिला की तरफ जान बूझकर नज़र डाल नहीं लेता है। मगर मुत्तकी हर ऐसे मौके पर अधिक ताकत के साथ गज़ बसर का पालन करता है। क्योंकि वह औरत अकेली सामने नज़र नहीं आती बल्कि उस औरत के पीछे एक और अस्तित्व भी साथ आता हुआ दिखता है। जिसे अलीम(जानने वाला) व बसीर (देखने वाला) ख़ुदा कहते हैं।

पांचवां उदाहरण

एक अहमदी दोस्त थर्ड क्लास में सफर कर रहे थे। रास्ते में उन्हें एक मिलने वाले रेल में मिल गए। जो सेकंड क्लास में थे। उन्होंने उन्हें बुला लिया और एक दो स्टेशन तक वे उनके साथ ही सेकंड क्लास में सवार चले गए। फिर अपने डिब्बा में आ गए। यात्रा समाप्त हो गया और वह साहब टिकट देकर बाहर चले गए घर आकर और हिसाब करके उन्होंने वह रकम जो इन दो स्टेशनों के बीच सेकंड और थर्ड किराए का अंतर था। एजेंट एन.डबलयू.आर के नाम भेज दिया और लिख दिया कि एक आवश्यकता के कारण मैं अपनी सफर में दो स्टेशन तक सेकंड क्लास में सफर कर लिया था। यह इस का किराया भेज रहा हूं याद रखना चाहिए कि थर्ड क्लास के मुसाफिर को 25 सैर से अधिक वज़न इरादा के बिना तुलवाए और किराया अदा किए रेल में ले जाना और बिना अनुमति स्टेशन मास्टर या प्लेट फार्म टिकट खरीदने के सिवा चालाकी से अंदर पहुँच जाना और होशियारी के साथ स्टेशन की दूसरी तरफ से बाहर निकल जाना ऐसे काम हैं जिनसे एक मुत्तकी शर्माता है।

छठा उदाहरण

एक मास्टर साहिब थे। वाबजूद इस सरकारी हुक्म के कि ट्यूशन बिना इजाज़त हेड मास्टर न ली जाया करे। ख़ुद छुप छुप कर ऐसी टयूशनें ले लिया करते थे। एक शायर जो किसी और शायर का शेर अपनी ग़ज़ल में अपना करके मिला लेते थे। या एक लेखक साहब जो दूसरों की पुस्तक को अपने लेख में बिना लेखक का नाम स्वीकार करने के लेखक के नाम शामिल कर लिया करते थे। एक प्रभावशाली छात्र जो किसी इम्तेहान के पर्चा का अवैध रूप से कुछ दिन पहले पता लगा लिया करते थे। एक वकील साहिब जो पूरा मेहनताना लेकर भी पेशी के समय ऑफ़ लाइन हो जाया करते थे। एक डॉक्टर साहब जो केवल युवा महिलाओं को चिकित्सा सलाह के समय सीना बेन लगाकर और अच्छी तरह ठोक बजाकर देखना चाहिए समझते थे। एक सज्जन जो बिना जायज़ हक के दूसरों के ख़तों को पढ़ा करते थे। एक मुल्ला जी जो लोगों के सामने मस्जिद में तो बहुत संवार संवार कर नमाज़ पढ़ते थे। मगर अकेले में वह बात उनसे सादिर न होती थी। एक पेशेवर (जैसे दर्ज़ी, सुनार, लोहार) जो वादा करके फिर इस वादे पर अपना काम पूरा करके नहीं देते थे। एक कर्मचारी जो अपने वेतन के समय तो पूरी राशि की मांग करते थे। मगर ख़ुद काम करने के समय अपनी समीक्षा नहीं रखते थे कि क्या मैं अनुबंध के अनुसार चल रहा हूँ या कुछ उपेक्षा कर रहा हूँ। आदि आदि सब लोग दनियादारों की नज़रों में चाहे बड़े चालाक कहलाएँ। मगर ख़ुदा तआला के पास वह मुत्तकी नहीं हो सकते। मुत्तकी वही हैं जो ऐसे काम नहीं करते और फूंक-फूंक कर कदम रखते हैं।

सातवां उदाहरण

एक आदमी जो काम विचारों को अपने दिल में जगह देता है और ना महरमों के हुस्न व सुन्दरता को अपने दिल में सदैव रखता है या अपने बक्से में हसीन औरतों की तस्वीरें ख़ज़ाना समझ कर बंद करके रखता है। या पड़ोसी के फोनोग्राफ में किसी महिला के गाने की आवाज़ को मज़े ले लेकर सुनता रहता है। या मर्द और हसीन लड़कों को बिना आवश्यकता इसलिए रखता है कि उनका नज़दीकी उसे कुछ आनंद देती है यह और ऐसी हज़ारों बातें तकवा की जड़ काट डालने वाली हैं। गो वह आजकल सभ्यता का एक महान अंग बनी हुई हैं। इसी तरह एक आदमी जो शारीरिक सफाई से लापरवाह है। उसके शरीर से बदबू आती है और उसके कपड़े गंदे रहते हैं नापाक छींटों का ध्यान नहीं करता। अपने दांत साफ नहीं रहता। जिसकी वजह से उसके मुंह से बदबू आती है, कच्चे लहसुन या प्याज या मूली या हींग खाकर मस्जिद में आ जाता है और नमाज़ियों को तकलीफ देता है। कोई सराहनीय मुत्तकी नहीं है।

आठवां उदाहरण

वह आदमी जो अपने शरीर को ख़ुदा की अमानत नहीं समझता और अपनी सेहत और ताकत को धर्म की सेवा के लिए सही रखने से लापरवाही करता है। आदी बद

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

माता-पिता कई बार तो बच्चों को किसी काम के लिए सख़्ती से डांटते हैं बहुत सख्ती करते हैं और कई लोग बच्चों की ग़लतियों पर इतना ही अधिक ध्यान नहीं देते हैं कि बच्चे को अच्छे और बुरे का फर्क मिट जाता है और ये दोनों बातें बच्चों की तरबियत पर बुरा असर डालती हैं।

बापों को विशेष रूप से बच्चों के तरबियत में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि कहां नरमी करनी है कहां सख़्ती करनी है। कैसे समझाना है यह बापों की ज़िम्मेदारी है सिर्फ माताओं पर न छोड़ें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़लीफाओं की तस्वीर के इस्तेमाल के बारे में आवश्यक ध्यान रखने के बारे में नसीहत।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बिदअतों को दूर करने के लिए तशरीफ लाए थे। एक अहमदी को बिदअत के ख़िलाफ जिहाद करना चाहिए।

ज्ञान के मामले में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। इस को फैलाने की कोशिश करनी चाहिए।

डाक्टर बीमारों को तब्लीग़ क्या करें। जल्दी करने वाली तबीयत कई बार बिना सोचे समझे एतराज़ करती है और इस से दोस्तों को बचना चाहिए।

बीमारों पर हक और सच्चाई का बहुत अधिक असर होता है।

इमाम की आवाज़ से लोगों की आवाज़ कोई वास्तविकता नहीं रखती। तुम्हारा फर्ज़ है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ आए तुम तुरंत इस पर लब्बैक कहो और उसके पालन के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी तरक्की का राज़ छुपा है।

अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते हुए लोगों को ख़ुश करने के लिए काम नहीं करना चाहिए।

अदरणीय अब्दुन्नूर जाबी साहिब आफ सीरिया की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 18 मार्च 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ - اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ -

माता-पिता कई बार तो बच्चों को किसी काम के लिए सख़्ती से डांटते हैं, बहुत सख़्ती करते हैं और कई लोग बच्चों की ग़लतियों पर इतना अधिक ही ध्यान नहीं देते हैं कि बच्चे को अच्छे और बुरे का फर्क मिट जाता है और ये दोनों बातें बच्चों की तरबियत पर बुरा असर डालती हैं। अधिक सख़्ती, बात-बात पर बिना वजह के और बिना दलील के रोकना टोकना बच्चों को बाग़ी बना देता है और फिर वह एक उम्र के बाद जायज़ बात की भी परवाह नहीं करते। इसी तरह बच्चे की हर मामले में नाजायज़ तरफदारी भी जैसा कि मैंने कहा बच्चों की तरबियत पर बुरा असर डालती है। खासकर ऐसी उम्र के बच्चे जो बचपन से निकल कर जवानी में कदम रख रहे हों, उन्हें माता पिता के यह व्यवहार जो हैं ख़राब करते हैं, खासकर के बापों के। इसलिए ऐसी उम्र में बच्चों को समझाने के लिए दलील से बात करनी चाहिए और खासकर उस समय जब बच्चों पर सिर्फ अपने सीमित वातावरण का ही प्रभाव नहीं है बल्कि पूरे देश बल्कि इससे भी बढ़कर पूरी दुनिया के माहौल का असर हो रहा है। ऐसी हालत में बापों को विशेष रूप से बच्चों के तरबियत में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि कहां नरमी करनी है, कहां सख़्ती करनी है। कैसे समझाना है यह बापों की ज़िम्मेदारी है सिर्फ माताओं पर न छोड़ें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कैसे तरबियत किया करते थे उसकी एक घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो वर्णन फरमाते हैं। एक घटना का ज़िक्र करते हुए हैं इस का व्याख्या वर्णन कर रहे हैं कि कौन सी चीजें हलाल हैं और कौन सी तय्यब हैं। आप फरमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने विभिन्न जानवरों को विभिन्न कामों के लिए पैदा किए है। कोई सुंदरता के लिए कि देखने में सुंदर मालूम होता है। कोई आवाज़ के लिए कि उसकी आवाज़ बहुत अच्छी है। कोई खाने के लिए कि उसका गोश्त अच्छा है। कोई दवा के लिए कि उसके शरीर में किसी बीमारी से सेहत देने की ताकत है। केवल जानवर और हलाल देखकर उसे खाना नहीं चाहिए। हो सकता है कि एक जानवर का गोश्त सेहत के लिए ख़तरनाक न हो मगर वह जैसे कुछ फसलों या इंसानों में बीमारी पैदा करने वाले कीड़ों को खाता हो। (इसीलिए कई प्रकार के पक्षी हैं यद्यपि वह हलाल हैं लेकिन सरकारों की तरफ से भी उन्हें मारने की पाबंदी होती है। पाकिस्तान में भी पाबंदी होती है क्योंकि वे फसलों के कीड़े खा रहे होते हैं। तो फरमाया कि कीड़े खाने वाले हैं) गोश्त के मामले में उसका गोश्त हलाल भी होगा और तय्यब भी मगर फिर भी मानव जाति के आम लाभ देखते हुए उसका गोश्त तय्यब न रहेगा। (बेशक वास्तव में हलाल भी है तय्यब भी है लेकिन फिर देखने वाली यह बात होगी कि अधिक लाभ किसका है। अपने लाभ पर मानव जाति के लाभ को खत्म करना होगा या मानव जाति के लाभ के लिए अपने लाभ पर प्राथमिकता देनी होगी) क्योंकि उनके भोजन की वजह से इंसान कुछ और लाभों से वंचित रह जाएंगे। (हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि) मुझे बचपन में ही यह सबक सिखाया गया था। मैं बचपन में एक बार एक तोता शिकार करके लाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे देख कर कहा कि महमूद ! इसका गोश्त हराम तो नहीं है लेकिन अल्लाह तआला ने हर जानवर खाने के लिए ही पैदा नहीं किया। कुछ सुन्दर जानवर देखने के लिए हैं कि उन्हें देखकर आंखें राहत पाएं। कुछ जानवरों को अच्छी आवाज़ दी है कि उनकी आवाज़ सुनकर कान को ख़ुशी मिलती है। इसलिए अल्लाह तआला ने इंसान की हर इन्द्रिय के लिए नेअमतें पैदा की हैं वे सब की सब छीन कर ज़बान को ही न दे देनी चाहिए।(यानी अपनी ज़बान के मज़े के लिए यह आवश्यक नहीं

है कि हर जानवर को मारा जाए और खाया जाए इसके दूसरे जो लाभ हैं वह देखना चाहिए। केवल अपने खाने का मज़ा नहीं लेना चाहिए तो फिर फरमाया कि) देखो यह तोता कैसा ख़ूबसूरत जानवर है। हज़रत मसीह मौऊद ने हज़रत मुस्लेह मौऊद को फरमाया कि देखो यह तोता कैसा सुंदर जानवर है। पेड़ पर बैठा देखने वालों को कैसा अच्छा मालूम होता है।

(उद्धरित तफसीर कबीर भाग 4 पृष्ठ 263)

तो यह सुंदर अंदाज़ जो तरबियत का है न केवल दिल पर असर करने वाला है बल्कि अल्लाह तआला के इस आदेश को भी ध्यान में बैठाने वाला है कि हलाल और तय्यब तो खाओ लेकिन इसमें भी सावधानी होनी चाहिए। अल्लाह तआला ने हलाल का भी आदेश दिया तय्यब का भी आदेश दिया लेकिन तय्यब की परिभाषा कई जगह बदल भी जाती है। इसलिए जो जानवर या पक्षी अन्य उपयोगी कामों में इस्तेमाल हो रहे हैं या वहाँ दूसरी जगह लाभ पहुंचा रहे हैं उनमें से कुछ हलाल होने के बावजूद तय्यब नहीं रहते क्योंकि उनका लाभ उनके गोश्त खाने से दूसरी जगह पर बहरहाल अधिक है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के वर्णन की गई कुछ और घटनाएं भी प्रस्तुत करता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया से बिदअतों को दूर करने और इस्लाम की सुंदर शिक्षा दिखाने आए थे। इसलिए जब आप का यह मिशन था तो कैसे यह संभव है कि आप अपनी ज़ात से किसी प्रकार की बिदअत के फैलने की संभावना हो या बिदअत फैलाने वाले हों। (नऊज़ो बिल्लाह)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक घटना बयान फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद अपनी तस्वीर खिंचवाई लेकिन जब एक कार्ड आपकी सेवा में पेश किया गया,(पोस्ट कार्ड था।) जिस पर अप की तस्वीर थी तो आपने कहा कि इस की इजाज़त नहीं दी जा सकती और जमाअत को हिदायत फरमाई कि कोई आदमी ऐसे कार्ड न ख़रीदे। नतीजा यह हुआ कि अगली बार किसी ने ऐसा करने का साहस न किया

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 14 पृष्ठ 214)

लेकिन आजकल फिर कुछ स्थानों पर कुछ ट्वीट्स (Tweets) में वाट्स अपस (Whats App) पर मैंने देखा है कि लोग कहीं से यह पुराने कार्ड निकाल कर या फिर उन्होंने अपने बुजुर्गों से लिए या कइयों ने पुरानी किताबों की दुकान से ख़रीदे और फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। तो यह ग़लत तरीके है इसे बंद करना चाहिए। तस्वीर आप ने इसलिए खिंचवाई थी कि दूर दराज़ के लोग और खासकर यूरोपीय लोग चेहरा पहचानने वाले होते हैं। वे आप की तस्वीर देखकर सच्चाई की तलाश करेंगे , इस की खोज करेंगे। लेकिन जब आपने देखा कि कार्ड पर तस्वीर प्रकाशित कर के यह कारोबार का माध्यम बनाने की कोशिश कर रहे हैं या कहीं बना न लें और जब आप ने महसूस किया कि इस से बिदअत न फैलनी शुरू हो जाए, यह बिदअत फैलने का माध्यम न बन जाए तो आप ने दृढ़ता से इस को रोक दिया बल्कि कई जगह आप ने फरमाया कि इनको नष्ट करवा दिया जाए। इसलिए वे लोग जो उन तस्वीरों का कारोबार करते हैं, जिन्होंने तस्वीरों को कारोबार का माध्यम बनाया हुआ है और बेहद कीमतें इस की हासिल करते हैं उन्हें ध्यान देना चाहिए। फिर कुछ ऐसे भी हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर में कुछ रंग भर देते हैं हालांकि कोई coloured तस्वीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नहीं है। यह भी बिल्कुल ग़लत बात है इस से भी सावधानी करनी चाहिए। इसी तरह ख़लीफ़ाओं की तस्वीरों के दुरुपयोग हैं उनसे भी बचना चाहिए।

एक बार सिनेमा और फोनोग्राफ के बारे में एक शूरा में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के सामने बहस चल गई तो इस पर आपने फ़रमाया कि "यह कहना कि सिनेमा या बाई स्कूप या फोनोग्राफ अपनी ज़ात में बुरा है सही नहीं। फोनो ग्राफ ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सुना है बल्कि उस के लिए ख़ुद आपने एक नज़्म लिखी और पढ़वाई और फिर यहां के हिंदुओं को बुलवा कर वह नज़्म सुनाई। यह वह नज़्म है जिस का एक शेर है कि

आवाज़ आ रही है यह फोनो ग्राफ से
ढुंढो ख़ुदा को दिल से न लाफ व गज़ाफ से

तो सिनेमा अपनी ज़ात में बुरा नहीं।(लोग बड़ा सवाल करते हैं कि वहां जाना गुनाह तो नहीं है। यह अपनी ज़ात में बुरा नहीं है।) बल्कि उस समय उसकी जो सूरतें हैं वे चरित्र को ख़राब करने वाली हैं। अगर कोई फिल्म पूर्ण रूप से रूप में तब्लीग़ के लिए या शैक्षिक हो और उसमें कोई हिस्सा तमाशा आदि न हो तो इस में कोई हर्ज नहीं।" (कोई ड्रामेबाज़ी न हो।) हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "मेरी यही राय है कि तमाशा तब्लीग़ी भी नाजायज़ है।" ग़लत तरीका है।

(उद्धरित रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत साल 1939ई पृष्ठ 86)

इसलिए इस बात से उन लोगों पर स्पष्ट हो जाना चाहिए जो यह कहते हैं कि एम.टी.ए अगर कार्यक्रमों में कई बार संगीत आ जाए तो कोई हर्ज नहीं या वायस आफ इस्लाम रेडियो शुरू हुआ है उस पर भी आ जाए तो कोई हर्ज नहीं। इन बातों और इन बिदअतों को ख़त्म करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे। हमें अपनी सोचों को इस ओर ढालना होगा जो आप अलैहिस्सलाम का उद्देश्य था। नए आविष्कार से लाभ उठाना हराम नहीं न यह बिदअत है लेकिन उनका दुरुपयोग बिदअत बना देता है। कुछ लोग यह प्रस्ताव भी देते हैं कि ड्रामे के रंग में तब्लीग़ के कार्यक्रम या तरबियत के कार्यक्रम बनाए जाएं तो उनका प्रभाव होगा। उन्हें याद रखना चाहिए कि अगर आप एक ग़लत बात में आप दाख़िल होंगे या कोई भी ग़लत बात अपने कार्यक्रमों में दाख़िल करेंगे तो कुछ समय बाद सौ प्रकार की बिदअतें अपने आप दाख़िल हो जाऐंगी। ग़ैरों के पास तो शायद कुरआन भी म्यूज़िक से पढ़ना जायज़ है लेकिन एक अहमदी ने बिदअतों के ख़िलाफ जिहाद करना है इसलिए हमें इन बातों से बचना चाहिए और बचने की बहुत कोशिश करनी चाहिए।

एक ग़ैर अहमदी ने एक अख़बार में लेख लिखा जो एक लतीफा तो है। इस से एक मौलवी साहिब एक अज्ञानता भी दिखती है लेकिन साथ ही उन की सोचों का भी पता लगता है कि यह इस बात को जायज़ मानते हैं। यह लिखने वाला लिखता है कि एक जगह एक अरब सिंगर अरबी में संगीत के साथ गाना गा रही थी। मौलवी साहब को भी वहां ले गए। वह बड़े झूम झूम वह सुन रहे थे। तो उन्होंने पूछा कि आप इस अरबी पर इतना झूम क्यों रहे हैं। कहते हैं कि सुबहान अल्लाह और साथ-साथ सुबहान अल्लाह और माशा अल्लाह और अल्लाह अकबर भी पढ़े जाएं। उन्होंने कहा झूम क्यों रहे हैं।? कहता है देखो। देख नहीं रहे तुम कितनी सुंदर आवाज़ में कुरआन पढ़ रही है। इस गाने को उन्होंने क्योंकि वह अरबी में था कुरआन करीम बना दिया। तो जब यह बिदअतें फैलती हैं तो सोचें भी इसी तरह बदल जाती हैं।

डॉक्टरों का उल्लेख करते हुए एक जगह आप फरमाते हैं कि डॉक्टर विशेष रूप से भारत में मरीज़ का इलाज करते हुए समझते हैं कि अपने मरीज़ का हम ही इलाज कर सकते हैं और किसी और को दिखाने की ज़रूरत नहीं और किसी सलाह की ज़रूरत नहीं है। इस बात को और बयान फरमाते हैं कि "भारतीय डॉक्टरों में से निन्यानवे प्रतिशत ऐसे हैं जो दूसरे से सलाह को भी अपना अपमान समझते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं डॉक्टर हशमतुल्लाह साहिब (जो आप के डाक्टर थे) तजुर्बे में बाकी जितने सहायक सर्जन हैं मैंने देखे हैं इन से अच्छे हैं मगर बावजूद इसके यह मायने नहीं कि उन्हें सलाह की ज़रूरत नहीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नियम था और ख़ुद भी जब 1918 ई में बीमार हुआ हूँ तो मैं ने भी ऐसा ही किया कि डाक्टर और हकीम सब जमा कर लिए और डॉक्टरों की दवाई भी खाता था और हकीमों की भी। क्या मालूम अल्लाह तआला किस से लाभ दे। अगर कोई डॉक्टर अपने आप को ख़ुदा समझता है तो समझे हम तो उसे बन्दा ही समझते हैं।"

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 14 पृष्ठ 129)

इसी तरह आजकल भी कुछ डॉक्टर नाराज़ हो जाते हैं कि दूसरे से इलाज क्यों करवाया। कई बार आम जड़ी बूटियों का इलाज करने वाले लोग जो नियमित डाक्टर भी नहीं उन के पास कई नुस्ख़े उनके पास आ जाते हैं और वे इलाज करते हैं और मरीज़ का सबसे अच्छा इलाज करते हैं। जहाँ कई बार डॉक्टर फेल हो जाते हैं कोई इलाज सफल नहीं होता वहाँ उनके यह नुस्ख़े या टूने टोटके काम आ जाते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "सय्यद अहमद नूर साहब काबली की नाक पर घाव था। उन्होंने कई इलाज करवाए। लाहौर के मियू हस्पताल भी गए। एक्स-रे करा कर इलाज किया कि पता लगे क्या कारण है मगर घाव और भी ख़राब होता गया। आख़िर वह पेशावर गए वहाँ एक नाई से इलाज कराया। उसने सिर्फ तीन दिन दवाई उपयोग करवाई और घाव अच्छा हो गया। तो फरमाते हैं कि अब ऐसे विशेषज्ञ मौजूद हैं जिन्हें ऐसे-ऐसे पेशे आते हैं कि अगर उन्हें ज़िन्दा रखा जाए तो इससे आगे कई नए कैरियर जारी हो सकते हैं। जिन्दा रखने का मतलब यह है कि इसमें रिसर्च करवाई जाए, उन्हें ध्यान दिलाया जाए कि वह आगे अपने नुस्ख़े जारी करें लेकिन होता क्या है? तीसरी दुनिया के देशों में उनके जानने वाले चूंकि उन्हें जिन्दा रखने की कोशिश नहीं करते इसलिए वे तरक्की नहीं कर रहे। अगर उनकी तरफ लोगों का ध्यान हो तो उनसे आगे कई पेशे निकल सकते हैं। आप फरमाते हैं

कि यही हड्डियों का ठीक करना है पहलवान और नाई उसे जानते हैं और पुरानी दर्दों और टूटी हड्डियों को सही किया जा सकता है। कुछ इस में बड़े माहिर होते हैं। कुछ तो बने हुए हैं जो सही हड्डियां भी तोड़ देते हैं लेकिन कुछ बड़े विशेषज्ञ हैं। तो उसे जान कर फैलाने की कोशिश करनी चाहिए। आप फरमाते हैं कि पुराने ज़माने में लोग इन व्यवसायों को बताने में बहुत कंजूसी से काम लेते थे और कोई किसी को बताता न था। इसलिए वे मिट गए। बहुत सारी चीजें, बातें जो पुराने लोगों में थीं, कुछ नुस्ख़े थे क्योंकि आगे बताते नहीं थे किसी को पता न लग जाए इसलिए समाप्त हो गए। यूरोप वाले ऐसा नहीं करते बल्कि अपनी पेशे को आम कर देते हैं और वह रुपया भी अधिक कमा सकते हैं।(कुछ दवाइयां भी पेटेंट होती हैं कुछ समय के बाद सामान्य हो जाती हैं।)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक नाई था जिसे ऐसी मरहम का पता था जिस से बड़े-बड़े घाव, ख़राब घाव भी अच्छे हो जाते थे। लोग दूर-दूर से उसके पास इलाज करवाने के लिए आते थे। उसका बेटा उसका नुस्खा पूछता तो वह जवाब देता है कि इसे जानने वाले दुनिया में दो नहीं होने चाहिए। इसलिए मेरे पास ज्ञान है यहीं रहेगा बेटे को भी नहीं बताना। आख़िर वह बूढ़ा हो गया और सख्त बीमार हुआ तो उसके बेटे ने कहा कि अब तो बता दें। ज़िन्दगी का पता कुछ नहीं। वह कहने लगा कि अच्छा अगर तुम समझते हो कि मैं मरने लगा हूँ तो बता देता हूँ मगर फिर कहने लगा कि क्या पता अच्छा ही हो जाऊं इसलिए फिर बताने से रुक गया और कुछ ही घंटों के बाद उसकी जान निकल गई और उसका बेटा बेचारा पूछता रह गया। फन से वंचित रह गया। उसका तो यह विचार था कि फन हासिल कर लूँगा लेकिन बहरहाल अपने पिता की ज़िद की वजह से जाहिल का जाहिल ही रह गया। और उस का बाप उस के कोई काम न आ सका। तो आप फरमाते हैं कि कंजूसी तरक्की का नहीं बल्कि ज़िल्लत व रुसवाई का कारण बनता है। इसलिए ऐसे मामलों में, ज्ञान के मामले में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। इसे फैलाने की कोशिश करनी चाहिए। आप फरमाते हैं कई बार परिवारों की तबाही का कारण हो जाता है। तो इन कारोबारों और कला का सिखाना ख़तरनाक नहीं बल्कि उपयोगी है। इससे ज्ञान बढ़ता है और मैं चाहता हूँ कि यह कला विशेष कर के मुर्दा कला को तरक्की दी जाए।

(उद्धरित दैनिक अल्फज़ल 29 अप्रैल 1939 ई जिल्द नम्बर 27 नम्बर 98 पृष्ठ 4)

अत: कहीं डॉक्टर अहंकार का कारण बन रहे होते हैं इस अहंकार के कारण दूसरे के लिए परेशानी का कारण बन रहे होते हैं और कभी अज्ञानता जो है वह ज्ञान को नष्ट कर देती है और फिर वह लाभ जो दुनिया को पहुँच रहा है इससे दुनिया वंचित रह जाती है। तो यह गैर विकसित या विकास शील देशों में साधारण बात है। वहाँ जमाअत अहमदिया को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए कि इस अज्ञानता को दूर करें।

मनुष्य के विभिन्न तबीयतें होती हैं। कई ईमानदारी में बढ़े हुए होते हैं और हर बात को दिल से मानते हैं। कुछ जल्दी करने वाले होते हैं। नीयत बुरी न भी हो तब भी ऐतराज़ कर देते हैं या ऐसे रंग में बात करते हैं जिस में ऐतराज़ का रंग हो। ऐसे ही लोगों का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक जगह फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में एक बार ऐसी ही दो अलग तबीयतें जमा हो गईं (यानी एक जगह इकट्ठी हो गईं।) 4 अप्रैल 1905 ई को जो ख़तरनाक भूकंप आया इस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ज़लज़लों से संबंधित प्राय इलहाम हुए।(बहुत बार इलहाम हुए कि अब भूकंप आएंगे) तो आप ख़ुदा के के कलाम का अदब और सम्मान करते हुए अपने बाग़ में तशरीफ़ ले गए। कई मूर्ख(उस वक्त भी यह) कह दिया करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्लेग से डर कर बाग़ में चले गए हैं। उस ज़माने में प्लेग भी था और भूकंप भी आ रहे थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि अजीब बात है कि मैं कुछ अहमदियों के मुंह से भी यह बात सुनी है हालांकि प्लेग के डर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कभी अपना घर नहीं छोड़ा। उस समय चूंकि ज़लज़लो से संबंधित आप को अक्सर इलहाम हो रहे थे। इसलिए आप ने यही उचित समझा कि कुछ समय बाग़ में रहें बाकी दोस्तों को भी आपने वहीं रहने की तहरीक की और चूंकि जल्दी थी इसलिए कुछ तो टेंट की व्यवस्था की गई और कुछ लोगों ने ईंटों पर चटाई आदि डालकर रहने के लिए झोपड़ियां बना लीं" और सब को आप ने अपने साथ रखा।(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 14 पृष्ठ113-114) इसलिए जल्दबाज़ तबीयत कई बार बिना सोचे समझे एतराज़ की बात कर देता है और इस से दोस्तों को बचना चाहिए।

ख़ुत्बा इलहामिया के दौरान हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जिस तरह देखा उसे बयान करते हुए आप फरमाते हैं कि आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बताया कि आप अरबी में ईद का ख़ुत्बा पढ़ें आप को ख़ुदा तआला की तरफ से ज्ञान दिया जाएगा। आपने पहले कभी अरबी में ख़ुत्बा नहीं दिया था लेकिन जब ख़ुत्बा देने के लिए आए और ख़ुत्बा शुरू किया तो हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मुझे ख़ूब याद है यद्यपि मैं छोटी उम्र का होने के कारण से अरबी न समझ सकता था मगर आप की ऐसी ख़ूबसूरत और नूरानी हालत बनी हुई थी कि मैं आरम्भ से आख़िर तक बराबर तक़रीर सुनता रहा हालांकि एक शब्द भी नहीं समझ सकता था।

(उद्धरित हकीकतुर्रुअया, अन्वारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 187-188)

मस्जिद मुबारक कादियान के महत्त्व का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह घटना वर्णन की जिसका उल्लेख अल्फज़ल में एक रिपोर्ट में इस प्रकार मिलता है कि "कुछ दोस्तों ने अर्ज़ किया कि ख़ुत्बा इल्हामिया के साथ हज़रत मसीह मौऊद का जो इश्तेहार शामिल है इससे पता नहीं चलता कि मस्जिद मुबारक कौन सी है।(हज़रत मुस्लेह मौऊद से लोगों ने सवाल पूछा।) इस पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने ख़ुत्बा इल्हामिया मंगवा कर वह इश्तेहार पढ़ा और समझाया कि इसका अर्थ यही मस्जिद है जो हज़रत मसीह मौऊद ने बनाई है और फिर निम्नलिखित रिवायत आपने वर्णन कि एक बार उम्मुल मोमिनीन बीमार हो गईं और लगभग 40 दिन तक बीमार रहीं। एक दिन हज़रत साहिब ने फरमाया कि मस्जिद के बारे में इल्हाम है।(आप ने तो इस के संक्षेप शब्दों बयान किए हैं असल इल्हाम इस तरह है कि) مُبَارَكٌ وَ مُبَارِكٌ وَ كُلُّ اَمْرٍ مُبَارَكٍ يُجْعَلُ فِيْهِ कि आपने फरमाया कि यह इस मस्जिद के बारे में इल्हाम है तो चलो इस में चल कर दवाई देते हैं। (हज़रत अम्मा जान को वहां मस्जिद में जाकर दवाई देते हैं) तो आप ने वहां आकर दवा पिलाई और दो घंटे के अंदर उम्मुल मोमिनीन अच्छी हो गईं।"

(उद्धरित दैनिक अल्फज़ल 14 फरवरी 1921 ई जिल्द नम्बर 8 नम्बर 61 पृष्ठ 6)

डॉक्टरों को एक नसीहत कि उन्हें धर्म की सेवा करने का उन्हें हक अदा करना चाहिए और इसके लिए कोशिश करनी चाहिए। इस बारे में आप फरमाते हैं कि "बीमारों पर हक और सच्चाई का प्रभाव बहुत जल्दी होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक डाक्टर ने पूछा,(डॉक्टर ने पूछा कि) मैं धर्म की क्या सेवा कर सकता हूँ। आपने फरमाया कि आप बीमारों को तब्लीग़ किया करें। यह बहुत अच्छा मौका है क्योंकि बीमार दिल का नरम होता है।"

(अहम और ज़रूरी मामले, अन्वारूल उलूम भाग 13 पृष्ठ 338)

इसलिए यह सोच इस ज़माना के डॉक्टरों को भी रखनी चाहिए और यही सोच और काम फिर दुनिया कमाने के साथ-धर्म की सेवा का अवसर देकर अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करने वाला भी बनाऐगा।

पर्दे का मस्ला आजकल यहाँ पश्चिमी देशों में औरत के अधिकार के नाम पर या आतंकवाद को ख़त्म करने के नाम पर या बेवजह इस्लाम पर आपत्ति करने के कारण बड़े ज़ोर-शोर से उठाया जाता है। अल्लाह तआला ने कुरआन में इसके विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है कि किस तरह का परदा करना चाहिए। किन परिस्थितियों में करना चाहिए। इस में औरत की ज़ीनत के प्रकट होने के बारे में भी यह कहा है कि اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا (अन्नूर 32) इसकी व्याख्या करते हुए और इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो इरशाद है वह पेश करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا के यह अर्थ हैं कि वह हिस्सा जो आप ही आप प्रदर्शित हो और जिसे किसी मजबूरी की वजह से छुपाया न जा सके, चाहे यह मजबूरी बनावट के आधार पर हो। (यानी बनावट यह नहीं कि ज़ाहरी बनावट बल्कि शरीर की बनावट) जैसे कद लंबा है कि यह भी एक सुन्दरता है मगर इसे छुपाना असंभव है। इसलिए इसे दिखाने से शरीयत नहीं रोकती या बीमारी के आधार पर कोई हिस्सा शरीर का इलाज के लिए डॉक्टर को दिखाना पड़े (तो कुरान के अनुसार वह भी प्रदर्शित किया जा सकता है।) बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो यहां तक कहा करते थे कि हो सकता है डॉक्टर किसी महिला के बारे में सुझाव दे कि वह मुंह न ढाँपे (अपने चेहरे को कवर न करे।) अगर ढाँपे जाएगा तो उसकी सेहत ख़राब हो जाएगी और इधर उधर चलने फिरने के लिए कहे (यानी अगर डॉक्टर औरत को कहे कि मुहं न ढांपेऔर बाहर जा कर फिरे, नहीं तो तुम्हारी सेहत ख़राब हो जाएगी) तो ऐसे में अगर वह औरत मुंह नंगा करके चलती है तो भी हलाल है बल्कि कुछ फ़ुक़्हा के पास अगर औरत गर्भवती हो और कोई अच्छी दाई उपलब्ध न हो और डॉक्टर कहे कि अगर यह किसी योग्य चिकित्सक से अपना बच्चा नहीं जनवाये जाएगा तो उसकी जान खतरे में है तो ऐसे में अगर वह किसी पुरुष से बच्चा जनवाए तो यह भी जायज़ होगा बल्कि अगर कोई स्त्री पुरूष

डॉक्टर से बच्चा न जनवाए और मर जाए तो ख़ुदा तआला के सम्मुख वह ऐसी ही गुनहगार समझी जाएगी जैसे उसने आत्महत्या की है। फिर यह मजबूरी काम के लिहाज़ से भी हो सकती है जैसे ज़मींदार परिवारों की महिलाओं की मैंने उदाहरण दिया है। (पहले मुस्लेह मौऊद उदाहरण दे चुके हैं) कि उनके गुज़ारे ही नहीं हो सकते। (अगर वे काम न करें।) जब तक वे व्यापार में पुरुषों की सहायता न करें। तो यह सब बातें اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا में ही शामिल हैं।"

(उद्धरित तफसीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 299)

इसलिए इस्लाम ने स्वतंत्रता भी स्थापित की है और सीमा भी निर्धारित की हैं। खुली छुट्टी नहीं दी। कुछ मजबूरियों की वजह से अनुमति है कि पर्दे को कम किया जा सकता है कम गुणवत्ता का किया जा सकता है लेकिन साथ ही बेवजह कोई ना जायज़ रूप से इस्लामी आज्ञाओं को छोड़ना भी मना है। इस्लाम ने आज़ादी के नाम पर अभद्रता नहीं रखी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का धर्म में तफकह (चिन्तन) का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "इस्लामी मस्लों का आधार तफकह पर है। उनके अंदर बारीक हिकमतें होती हैं और जब तक उन्हें न समझा जाए मनुष्य धोखा खाकर कई बार गुमराही कि तरफ निकल जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार किसी मज्लिस में उल्लेख किया कि इंसान अगर तक्वा से काम ले तो क्या चाहे सौ शादियां कर ले। यह बात सिलसिले के अख़बारों में से एक में प्रकाशित हो गई जिस पर यह बहस शुरू हो गई कि मालूम होता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का धर्म यही है कि चार की हद नहीं।(मर्द तो बड़े ख़ुश हुए होंगे कि चार की हद नहीं।) विवाह कोई जितना चाहे कर ले। हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब मरहूम ने इस बहस और विवाद को जो बाहर होता था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पहुंचाया और पूछा कि इस से आप का क्या मतलब था आपने कहा मेरा मतलब यह था कि अगर एक बीवी मर जाए या किसी कारण तलाक दिया जाए तो आदमी इस के बजाय और शादी कर सकता है। इसी तरह चाहे सौ विवाह कर ले। इस से आप ने इस विचार का खंडन फरमाया जो कुछ मस्लक (मतों) ने पेश किया है। (यह बात जो चल रही है किसी और संदर्भ में चल रही है। कई बार लोग कहते हैं कि जी फैसला हो गया। संदर्भ देखे बिना बात कर देते हैं। आप ने जो यह बात व्यक्त की थी इस की वजह यह बनी।) इस विचार को आप ने रद्द फरमाया कि कुछ मस्लकों ने पेश किया है कि जीवन भर आदमी को दूसरी शादी नहीं करनी चाहिए।(चाहे बीवी मर जाए या तलाक हो जाए। जब एक शादी हो गई तो ख़त्म हो गया और विशेष रूप से जब बावी मर जाए। तो आप ने इस विचार से इनकार फरमाया था इस बारे में बात हो रही थी।) हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि अब अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह कथन व्याख्या के बिना रह जाता तो कुछ समय बाद यही माना जाता कि आपका धर्म यही था कि जितनी शादियां चाहो कर सकते हो बस तक्वा की शर्त है। (आजकल तो मर्द शादी करते हैं दूसरी तीसरी भी तो इस तक्वा की शर्त को भी सामने नहीं रखते। तक्वा की शर्त ज़रूरी है।) इसी बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं मुझे याद आया कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल का विश्वास एक समय तक यही था कि चार से अधिक शादियाँ हलाल हैं। इन दिनों चूंकि जमाअत छोटी थी और दोस्त अक्सर परस्पर मिलते थे। (कादियान में थोड़े से लोग थे।) ऐसे मुद्दों पर बड़ी लंबी बहसें होती रहती थीं। उन्हीं दिनों एक ज़माने में इस मुद्दा पर भी बहस हुई। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने कहा। चार बावियों की हद शरीयत से साबित नहीं और अबु दाऊद की एक रिवायत भी दी जिसमें लिखा था कि हज़रत इमाम हसन के अठारह या उन्नीस निकाह हुए। इसी मज्लिस में किसी ने यह बयान दिया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह विश्वास नहीं है इस पर हज़रत ख़लीफा अव्वल ने यह माना कि संभव है आप के पास यह मामला पूरी तरह पेश न किया गया हो। इसलिए किसी से यह कहा कि यह किताब ले जाओ। (यह जो हज़रत इमाम हसन के बारे में अबु दाऊद की रिवायत है) और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह संदर्भ दिखा कर आओ। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि किताब लाने वाला किताब लेकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास जा रहा था। मुझे भी रास्ते में मिला। बग़ल में किताब दबाई हुई थी बहुत शौक से जा रहा था तो मैंने पूछा कि क्या बात है उसने बताया कि हज़रत मौलवी साहिब ने यह संदर्भ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिखाने के लिए भेजा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि इस का शौक देख कर और वैसे भी यह मुद्दा ऐसा था कि मैं भी जवाब के शौक में उसकी वापसी का इंतज़ार करता रहा।(वहीं खड़ा हो गया जहां मैंने पूछा था।) थोड़ी देर के बाद वह वापस आया। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मैंने देखा कि जाते समय तो वे बहुत ख़ुश ख़ुश था। मगर वापस आते समय सिर झुकाए हुए आ रहा था। तो मैंने पूछा क्या बात है। उसने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि मौलवी साहिब से जाकर पूछो कि यह कहाँ लिखा है कि यह सारी बीवियां एक ही समय में थीं।"(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 13 पृष्ठ 35-36) फिर यह मस्ला समाप्त हो गया है कि चार से अधिक शादियाँ भी बहरहाल नहीं हो सकतीं। और उसमें भी शर्तें हैं और तक्वा सबसे बड़ी शर्त है।

इमाम की आवाज़ पर लब्बैक कहने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते है। "इमाम की आवाज़ के मुकाबले में लोगों की आवाज़ कोई वास्तविकता नहीं रखती। तुम्हारा फर्ज़ है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ आए तुम तुरंत इस पर लब्बैक कहो और उसके पालन के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी तरक्की का राज़ छुपा है बल्कि अगर इंसान उस समय नमाज़ पढ़ रहा हो तब भी उसका फर्ज़ है कि वह नमाज़ तोड़ कर ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ का जवाब दे। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हमारे यहां ख़ुदा तआला के फज़्ल से इस प्रकार के उदाहरण भी पाए जाते हैं। हज़रत ख़लीफा अव्वल रज़ि अल्लाह तआला ने अन्हो ने एक बार ऐसा ही किया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आवाज़ देने पर तुरंत नमाज़ तोड़ दी और आपकी सेवा में हाज़िर हो गए और शायद मीर मेहदी हुसैन साहिब और मियां अब्दुल्ला साहिब सनौरी ने भी ऐसा ही किया।(यह दो आदमी थे उन्होंने भी ऐसा विभिन्न समयों पर किया। तो कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति जताई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह आयत पढ़ी कि

لَا تَجۡعَلُوۡا دُعَآءَ الرَّسُوۡلِ بَیۡنَکُمۡ کَدُعَآءِ بَعۡضِکُمۡ بَعۡضًا ؕ قَدۡ یَعۡلَمُ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ یَتَسَلَّلُوۡنَ مِنۡکُمۡ لِوَاذًا ۚ فَلۡیَحۡذَرِ الَّذِیۡنَ یُخَالِفُوۡنَ عَنۡ اَمۡرِہٖۤ اَنۡ تُصِیۡبَہُمۡ فِتۡنَۃٌ اَوۡ یُصِیۡبَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ

(अन्नूर 64)

कि तुम्हारे बीच रसूल का तुम्हें बुलाना इस तरह न बनाओ जैसे तुम एक दूसरे को (ऊंची आवाज़ों में) बुलाते हो (या समझते हो कि बुलाया आवाज़ का जवाब दे या न दे।) अल्लाह तआला वास्तव में उन लोगों को जानता है जो तुम से नज़र बचा कर चुपके से निकल जाते हैं अत: जो लोग इस आदेश का विरोध करने वाले हैं वे इस बात से डरें कि उन्हें कोई परीक्षा आ जाए या दर्दनाक अज़ाब आ पहुंचे।

तो इसी तरह एक दूसरी जगह आया है कि

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَ لِلرَّسُوۡلِ اِذَا دَعَاکُمۡ لِمَا یُحۡیِیۡکُمۡ

(सूरत अन्फाल 25)

कि हे मोमिनो ! तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल की बात सुनने के लिए फौरन हाज़िर हो जाया करो, जबकि वे तुम्हें ज़िन्दा करने के लिए पुकारे।

बहरहाल नबी की आवाज़ पर तुरंत लब्बैक कहना एक महत्त्वपूर्ण बात है बल्कि ईमान के निशानों में से एक बड़ा भारी निशान है

(उद्धरित तफसीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 408-409)

इसलिए जब यह उन बुज़ुर्गों ने यह किया तो बिल्कुल जायज़ था। नमाज़ असल उद्देश्य नहीं है या कोई और नेकी जब नबी की उपस्थिति मूल उद्देश्य नहीं है बल्कि मूल उद्देश्य बल्कि हमेशा ही उद्देश्य अल्लाह तआला तक पहुंचना है और उसकी बात मानना है जिसका उदाहरण इसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा से हमें मिलती है। इसी तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो के सहाबा से भी मिलती है।

एक महत्त्वपूर्ण बात जिसकी तरफ हज़रत मुस्लेह मौऊद ने ध्यान दिलाया था और हमेशा से महत्त्वपूर्ण है, अब भी है। आप फरमाते हैं कि मोमिन दरअसल अधिक प्रोत्साहन की प्रतीक्षा नहीं करता बल्कि उसके लिए केवल संकेत ही काफी होता है और संकेत को समझ कर वह ऐसे जोश से काम करता है कि कुछ लोगों को दीवानगी का संदेह होने लगता है। इसलिए जितने पूर्ण मोमिन दुनिया में हुए उन्हें लोगों ने पागल कहा। आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला माफ करे मेरे उस्ताद हुआ करते थे मौलवी यार मुहम्मद साहिब उनका नाम था। वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उनके दिमाग़ में कुछ ऐसी त्रुटि थी या कमी उनकी इस रंग की थी कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपना महबूब और अपने आप को प्रेमी समझते थे। इसी इश्क के कारण वे विचार करने लगे थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे मौऊद बेटा और मुस्लेह मौऊद बना दिया है। (इस प्यार की वजह से जो उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से

था। उनका मानना था कि वही मौऊद बेटा और मुस्लेह मौऊद हैं।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि बात करते-करते कई बार जोश में अपनी जांघों की तरफ ऐसे हाथ लाते जैसे किसी को बुला रहे हों या जिस तरह बुलाया जाता है तो एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी रंग में जोश से कुछ शब्द कह रहे थे कि मौलवी यार मुहम्मद साहिब कूद कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास जा बैठे। बाद में किसी ने पूछा कि आपने यह क्या किया है तो वह कहने लगे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐसा संकेत दिया था और यह संकेत मेरी ओर था कि तुम आगे आओ अत: मैं कूद कर आगे आ गया। तो यह दीवानगी थी। मगर कई रंग की दीवानगी भी अच्छी होती है। अंत उनकी यह दीवानगी हसद की तरफ नहीं गई बल्कि प्यार की तरफ गई। तो मुहब्बत का दीवाना ग़ैर के इशारा को भी अपने लिए संकेत समझता है (जो इशारा उसे न भी हो उसे भी अपने लिए समझता है।) आप जमाअत को नसीहत फरमाते हैं कि जो कौम ख़ुदा तआला की मुहब्बत का दावा करने वाली हो वह सही इशारे को क्यों नहीं समझती कि इस के लिए किया गया है। क्या हमारी जमाअत के दीवानों की वह मुहब्बत जो वह सिलसिले से रखते हैं मौलवी यार मुहम्मद जितनी भी नहीं है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जांघों पर धीरे से हाथ मारा और उन्होंने समझा कि मुझे बुला रहे हैं" और यहां अल्लाह तआला बड़े स्पष्ट रूप आदेश देता है और आप का मसीह आदेश देता है और इस पर ध्यान नहीं देते।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 733-734)

इसलिए इस पर हमें विचार करने की ज़रूरत है और समीक्षा कि किस हद तक अल्लाह तआला की आज्ञाओं और इशारों को हम समझते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं और हर काम अल्लाह तआला की रज़ा और उसकी आज्ञाओं पर चलते हुए करें। अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलते हुए लोगों को ख़ुश करने के लिए नहीं काम करना चाहिए। आप फरमाते हैं कि मौलवी ग़ुलाम अली साहिब एक कट्टर वहाबी हुआ करते थे। वहाबियों का फ़तवा था कि जुम्अ: की नमाज़ भारत में हो सकती है लेकिन हंफियों के निकट भारत में जुम्अ की नमाज़ हलाल नहीं थी। (उस समय अजीब अजीब उनके मस्ले थे) क्योंकि वह कहते थे कि जुम्अ: पढ़ना तब हलाल हो सकता है जब मुसलमान सुल्तान हो।(बादशाह मुसलमान हो तब ठीक है।) जुम्अ: पढ़ाने वाला मुसलमान काज़ी हो और जहां जुमअ: पढ़ा जाए वह शहर हो। भारत में अंग्रेज़ी शासन के कारण चूंकि न मुसलमान सुल्तान रहा था न काज़ी इसलिए वह जुम्अ: की नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं समझते थे। (यह मस्ला पैदा हो गया था।) उधर चूंकि कुरआन में वह लिखा हुआ पाते थे कि जब तुम्हें जुम्अ: के लिए बुलाया जाए तो तुरंत सभी काम छोड़ते हुए जुम्अ: की नमाज के लिए चल पड़ो इसलिए उनके दिलों को संतोष नहीं था। एक तरफ उनका जी चाहता था कि वह जुम्अ: पढ़ें और दूसरी ओर वे डरते थे कि कहीं कोई हनफ़ी मौलवी हमारे ख़िलाफ फत्वा न दे दे। इस मुश्किल की वजह से उनकी आदत थी कि जुम्अ: को गांव में पहले जुम्अ: पढ़ते थे और फिर ठहर कर ज़ुहर की नमाज़ पढ़ लेते थे और वे मानते थे कि अगर जुम्अ: वाला मस्ला सही है तब भी हम बच गए और अगर ज़ुहर पढ़ने वाला मस्ला सही है तब भी हम बच गए। इसलिए वह ज़ुहर का नाम ज़ुहर के बजाय एहतियाती रखा करते थे और समझते थे कि ख़ुदा ने अगर हमारे जुम्अ: की नमाज़ को अलग फेंक दिया तो हम ज़ुहर को उठाकर उसके सामने रख देंगे और अगर उस ने ज़ुहर को अस्वीकार कर दिया तो हम जुम्अ: उसके सामने प्रस्तुत कर देंगे और अगर कोई एहतियाती न पढ़ता था तो समझा जाता था कि वह वहाबी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि एक बार हम मौलवी ग़ुलाम अली साहिब के साथ गुरदासपुर गए। रास्ते में जुमअ: का समय आ गया। हम नमाज़ पढ़ने के लिए एक मस्जिद में चले गए। आपका सामान्य तरीका वहाबियों से मिलता जुलता था क्योंकि वहाबी हदीसों के अनुसार कार्य करना अपने लिए आवश्यक जानते हैं और उनका मानना है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत का पालन करना ही आदमी की नजात के लिए आवश्यक है। अत: आप (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) भी मौलवी ग़ुलाम अली साहिब के साथ गए और जुम्अ: की नमाज़ पढ़ी। जब मौलवी ग़ुलाम अली साहिब ने जुमअ: की नमाज़ पढ़ ली तो उन्होंने चार रकअत ज़ुहर की नमाज़ पढ़ ली। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते थे कि मैंने उनसे कहा कि मौलवी साहिब यह जुम्अ: की नमाज के बाद चार रकअतें कैसी हैं। वह कहने लगे यह अहतियाती हैं तो मैंने कहा मौलवी साहिब आप तो वहाबी हैं और ईमान की दृष्टि से इस के विरोधी हैं तो अहतियाती के क्या अर्थ हुए। तो कहने लगे यह अहतियाती इन अर्थों में नहीं कि ख़ुदा के सामने हमारा जुम्अ: स्वीकार होता है या ज़ुहर बल्कि यह इस मायने में है कि लोग विरोध न करें। लोगों का डर है। तो कई लोग ऐसे भी काम कर लेते हैं जैसे मौलवी ग़ुलाम अली साहिब कि वह अपने दिल में तो इस बात से ख़ुश हैं कि उन्होंने जुम्अ: पढ़ा है और उधर लोगों को ख़ुश करने के लिए चार रकअत ज़ुहर की नमाज़ भी पढ़ ली।"

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 382-383)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बार एक मज्लिस में किसी ने अर्ज़ किया कि हमारी जमाअत के अधिकतर लोग दाढ़ी शेव करते हैं। आप ने फरमाया कि असली बात तो अल्लाह तआला की मुहब्बत है जब इन लोगों के दिलों में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा हो जाएगी तब ख़ुद ब ख़ुद लोग हमारी नकल करने लग जाएंगे।"

(उद्धरित हमारे जिम्मा सारी दुनिया को फत्ह करने का काम है, अन्वारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 465)

अल्लाह तआला करे कि हम वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को समझने वाले हों और वास्तविक अल्लाह तआला की मुहब्बत हम में पैदा हो जाए और हमारा हर काम ख़ुदा तआला की आज्ञाओं के अनुसार हो।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। यह आदरणीय अब्दुल नूर अलजाबी साहिब सीरिया का है 1989 ई का उनका जन्म है और उन्हें शायद वहां की सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। सही तरह पूरा डाटा भी नहीं लिखा बहरहाल जो डाटा मौजूद हैं उसके अनुसार कुछ महीने पहले उन्होंने व्यापार प्रबंधन विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त की थी। 31 दिसंबर 2013 ई को वहां सरकारी नौकरों ने ही आप को गिरफ्तार किया था और गिरफ्तारी की वजह यह थी कि किसी ने उनका मोबाइल उधार लेकर वहां के विद्रोहियों को फोन किया था। यह सीरिया में हालात ख़राब होने के शुरुआती दिनों की बात है। जब किसी को ज़रूरत के समय खाली फोन देना उस समय कोई आपत्तिजनक बात नहीं होती थी तो बहरहाल विद्रोहियों में से किसी ने उनका फोन लेकर अपने साथियों से वित्तीय लेनदेन की बात की और इस बारे में फोन की सरकार की एजेंसियां तो इन्टर सेपट भी करती हैं, चेक करती हैं। उन्होंने तहकीक के दौरान पकड़ लिया। यह साबित हुआ कि आप के फोन से कॉल हुई थी और उनके विद्रोहियों के साथ संपर्क हैं। इसलिए आप को गिरफ्तार कर लिया गया और फिर शहीद कर दिया गया। मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार मरहूम गिरफ्तारी के तीसरे दिन ही सिर पर गंभीर चोट आने की वजह से फौत हो गए थे क्योंकि यह सरकारी पुलिस वाले भी बड़ा टॉर्चर करते हैं। जो विद्रोहियों का हाल है वही सरकार के नौकरों का भी हाल है हालांकि उनकी मौत की खबर उनके घर वालों को 22 फरवरी 2013 को मिली। इन्ना लिल्लाह वा इन्नना इलैहि राजेऊन।

यह सलीम अलजाबी साहिब के पोते थे जो बहुत पुराने अहमदी हैं। सलीम अलजाबी साहिब रबवा भी गए थे और हज़रत मुस्लेह मौऊद के ज़माने में उर्दू ज़बान भी उन्हें अच्छी आती है। अपने माहौल और परिचितों में खुश मिज़ाज और शरीफ फितरत और नर्म तबीयत और मिलनसार प्रसिद्ध थे। तबीयत में सख्ती बिल्कुल नहीं थी। सेहत और मज़बूत शरीर के मालिक उनकी बहन आदरणीया हिबतुर्रहमान जाबी बयान करती हैं कि मेरे भाई के जन्म से पहले मां ने ख़वाब देखा था कि उनका बेटा हुआ है और उन्हें कहा गया है कि आप ने नूर को जन्म दिया है। बाद में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अर्लराबि द्वारा अब्दुल नूर नाम उन्हें दिया गया। कहती हैं कि मेरा भाई बहुत आज्ञाकारी और योग्य था और सभी योग्यता और बुद्धि की प्रशंसा करते थे। मेरी इस से जो आख़री बात फोन पर हुई तो अलग लहजे में कहा कि अगर मैं सच्चा अहमदी हूँ तो मुझे दूसरों से दर गुज़र सीखना चाहिए। बहरहाल अल्लाह तआला उनके स्तर को ऊंचा करे और उनके परिजन मां बहन भाई दादा भी हैं उन सभी को धैर्य प्रदान करे।

सीरिया के हालात के लिए भी दुआ करनी चाहिए। वहाँ सरकार के अत्याचार के कारण ही जो विद्रोही समूह खड़ा हुआ और दोनों अब अपने ज़ुल्मों में बढ़े हुए हैं और तीसरा समूह आई.एस आई है जो इस्लाम के नाम पर एक और ज़ुल्म व बर्बरता का उदाहरण स्थापित कर रहा है और वहाँ रहने वाले जितने शरीफ फितरत लोग हैं वे शरीफ और वह अहमदी भी जो किसी ग्रुप के साथ नहीं इस में पिस रहे हैं और न वे सरकार से सुरक्षित हैं। सरकार भी उतनी ही ज़ालिम है। सरकार के विद्रोही ग्रुप भी उतने ही ज़ालिम है और इस्लाम के नाम पर सरकार का दावा करने वाले भी उतने ही ज़ालिम हैं। अल्लाह तआला इस देश पर भी रहम करे और अत्याचारियों से इस देश को जल्द छुटकारा दिलवाए।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 21 April 2016 Issue No.7

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (+91) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

परहेज़ है। जायज़ और हलाल सुख में लगा रहता है। वक्त जैसी कीमती चीज़ को नष्ट करता है। बहुत हँसता है। ग़रीबी बीमारी या ज़माने की शिकायत करता रहता है या अक्सर दुखी रहता है और जमाअत पर आमतौर में (बद ज़न) शंकित रहता है। बहुत शुष्क स्वभाव है। मामूली तकलीफ पर बेसब्री ज़ाहिर करता है और थोड़ी नेअमत को तुच्छ समझकर उसका शुक्रिया अदा नहीं करता। वह अभी तकवा की बारीक राहों से दूर है हालांकि सूक्ष्म और सूक्ष्मतर राहों से परिचित समझा जाए।

नौवां उदाहरण

एक व्यक्ति जो एक बुरी बात को इसलिए छोड़ देता है कि लोग इस बात को बुरा समझते हैं वह इस बात में मुत्तकी नहीं है। बल्कि मुत्तकी वह है जो गुनाहों को केवल ख़ुदा तआला के डर से छोड़े यानी इसलिए कि अल्लाह उसे देख रहा है। वह मोमिन है। वह सबसे अधिक प्यार और सम्मान के लायक है। उसने इस बात को अवैध करार दिया है। अगर मैं यह काम करूंगा। तो उस गुण वाली हस्ती से मेरा संबंध कम हो जाएगा। इस विश्वास की वजह से किसी गुनाह की बात से परहेज़ करने वाला असली मुत्तकी है। बुराई को बुराई समझ कर छोड़ना या नेकी को नेकी के कारण धारण करना यह नास्तिकों और यूरोपीय फलासफरों का मापदंड है जिसे एक मोमिन फलासफर किसी रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। मोमिन अगर बुराई से बचता है तो केवल ख़ुदा के डर से और भलाई करता है। तो केवल ख़ुदा के प्यार के कारण न कि देहरियों की तरह अपने सांसारिक लाभ के लिए या अपने नफ्स को आनंद और ख़ुशी देने के लिए। क्योंकि ख़ुदा तआला ने खाने पीने की वस्तुओं की तरह नेकी के अंदर भी एक आनन्द रखा है।

दसवां उदाहरण

एक तक़रीर करने वाला तक़रीर कर रहा है। उसने अपना लेख ख़ूब तैय्यार किया और अच्छी तरह पूरा सुना दिया। मगर अंत में दर्शकों से उसने यह कहा कि साहिबान वक़्त तंग हो गया है मेरी तबीयत अच्छी नहीं। इसलिए मैं इस लेख को पूरा तैयार नहीं कर सका और अब भी बहुत सा हिस्सा बाकी है (हालांकि उसके दिमाग़ में बिल्कुल कोई हिस्सा बाकी नहीं है और उस ने तैयारी भी पूरी कर ली थी) मजबूरन अपनी तक़रीर ख़त्म करता हूँ और आप से विदा होने की इजाज़त चाहता हूँ। इस वाक्यांश एक मुत्तकी कभी नहीं कह सकता। क्योंकि वह तो इन शब्दों को ग़लत और ना जायज़ जानकर उन से बचेगा।

ग्यारहवां उदाहरण

चूंकि कुछ गुनाह केवल दिल से सम्बन्ध रखते हैं। इसलिए अपने दिल में किसी के बारे में छुपी हुआ तिरस्कार, बद ज़नी, वैर या नफरत रखना, शारीरिक दोष, जाति और क़ौम के कारण या ज्ञान और बुद्धि और धन की कमी की वजह से किसी को कम और अपमानित समझना। किसी की ग़लती माफ करने के बाद भी इससे द्वैष रखना, दुर्भावना, चुग़ली या दोष निकालना। यथा अवसर दिखावा लोगों के सामने करते रहना। उपहास या दिल दुखाना या ताने के रूप में किसी से अच्छा कलाम करना। ऐसी मज्लिसों में रुचि महसूस करना जहां ख़ुदा के रसूल के विरोद्ध बातें या धर्म पर छिपा मज़ाक होता हो। ज्ञान को अपनी स्वाभाविक बड़ाई के माध्यम बनाना। धर्म की आड़ लेकर ऐसी गतिविधियों के लिए जो मोमिन की गरिमा के योग्य न हों। जैसे नमाज़ी के सामने से गुज़रने के बजाय हाथ के संकेत से रोक देने के दो कदम आगे बढ़कर इस ताकत और जोश से छाती में मुक्का मारना कि उसे छट्टी का दूध याद आ जाए। नफ्स के सभी निचली भावनाओं और बुरी आदतों पर नज़र न रखना और जिस बात में ज़रा भी संदेह हो कि वे ख़ुदा तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ है उसे छोड़ने में लापरवाही करना आदि आदि। यह सब बातें विचार वान मुत्तकियों की शान से दूर हैं। "

(चश्मा इरफान पृष्ठ 145 - 153 मौलाना मुबारक अहमद खां साहिब अयमन आबादी पूर्व संपादक पत्रिका इबरत कलकत्ता प्रकाशन अयमन आबाद 7 मार्च 1940 ई)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

तारीख़ अहमदियत

मुस्लिम जमाअत अहमदिया पर एक नज़र

अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक धार्मिक संगठन है जिसकी शाखाएं विश्व के 208 देशों में फैली हुई हैं। वर्तमान युग में यह जमाअत इस्लाम की सबसे कर्मठ धार्मिक जमाअत है जिसके सदस्यों की संख्या विश्व स्तर पर लगभग एक सौ साठ मिलियन है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद (1835-1908 ई.) ने 1889 ई. में पंजाब (हिन्दुस्तान) के एक सुदूर छोटे से गांव में जो कि क़ादियान के नाम से जाना जाता है, में इस जमाअत की स्थापना की। आप ने समस्त धर्मों के लिए अन्तिम युग के सुधारक तथा सम्पूर्ण विश्व का प्रतिज्ञात अवतार होने का दावा किया (अर्थात मसीह मौऊद महदी-ए-मा'हूद तथा अन्तिम युग के सुधारक) आपकी स्थापित की हुई जमाअत इस्लाम के वास्तविक, पवित्र तथा लाभान्वित करने वाले सन्देश की प्रतिमा है जो कि कृपालु एवं दयालु परमेश्वर पर ईमान लाते हुए अमन और विश्व भाई-चारे को बढ़ावा देती है। इसी विश्वास एवं भावना के साथ मुस्लिम जमाअत अहमदिया एक शताब्दी के अन्दर-अन्दर सम्पूर्ण विश्व में फैल चुकी है तथा लाखों पौण्ड चन्दा करके स्कूल निर्माण, अस्पतालों की स्थापना तथा धर्मों के मध्य परस्पर वार्तालाप के द्वारा सीखने के उपायों को प्रोत्साहित करते हुए इस्लाम की शान्तिपूर्ण शिक्षा पर कार्यरत होने में प्रयास रत है।

मुस्लिम जमाअत अहमदिया की वर्ष 2015 तक कुछ उपलब्धियां

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के मौजूदा पाचवें रूहानी ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब ने 30 अगस्त 2013 को हदीकतुल महदी आलटन लंदन में शुक्रवार के भाषण को संबोधित करते हुए कहा जिसके कुछ अंश पेश हैं ।

मुस्लिम जमाअत अहमदिया अब तक 206 देशों में स्थापित हो चुकी है। इस वर्ष 565 यूनिटों के 1050 स्थानों पर अहमदियत की स्थापना हुई, अब तक 108 देशों में 2563 मिशन और प्रचार केंद्र स्थापित हुए। इस वर्ष 68 देशों में 18000 सफाई कैंप लगे जिस से 35 लाख डालर की बचत की गई। अब तक पवित्र क़ुर्आन का 71 भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुआ, इस वर्ष 213 नई पुस्तकें 48 भाषाओं में प्रकाशित हुई, इस वर्ष 64 देशों में 625 पुस्तकें व फोलडर का प्रकाशन हुआ, बुक स्टाल के माध्यम से 24 लाख, प्रदर्शी के माध्यम से 474000 लोगों तक जमाअत का संदेश पहुंचा। इस वर्ष 1088 समाचारपत्रों ने समाचार तथा लेख प्रकाशित किये। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से 70 मिलियन लोगो तक जमाअत का संदेश पहुंचा। अब तक वाक़फ़ीन नो बच्चो की संख्या 50693 तक पहुंची । नुसरत जहां स्कीम के तहत 12 देशों में 41 अस्पताल, 44 क्लीनिक, 681 सीनियर सैकंडरी स्कूल नि:शुल्क मानवता की सेवा कर रहे हैं। इस वर्ष 116 देशों में 309 क़ौमों के 540782 लोग जमाअत में शामिल हुए ।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad